WORLD TRADE after COVID-19

Challenges and Opportunities

edited by

Dr. Santosh K. Yadav

WORLD TRADE AFTER COVID-19

Challenges and Opportunities

The COVID-19 pandemic, also known as the coronavirus pandemic, is an ongoing global pandemic of coronavirus disease caused by severe acute respiratory syndrome coronavirus 2 (SARS-CoV-2). The virus was first identified in December 2019 in Wuhan, China. The World Health Organization declared a Public Health Emergency of International Concern regarding COVID-19 on 30 January 2020, and later declared a pandemic on 11 March 2020. As of 1 June 2021, more than 170 million cases have been confirmed, with more than 3.55 million confirmed deaths attributed to COVID-19, making it one of the deadliest pandemics in history. The pandemic has resulted in significant global social and economic disruption, including the largest global recession since the Great Depression.

This volume, containing 20 papers in English and Hindi, seeks to examine the impact of COVID-19 on the world trade, with special reference to India. Taking a close look at the opportunities and challenges offered by the pandemic, it covers a varied range of topical issues from various field such as trade and commerce, information technology market, industries, national and international trade, political relations, labour market, and supply chain of goods and services. The challenges posed by the second and third waves of COVID-19 pandemic have been addressed as well.

Dr. Santosh K. Yadav is presently working as Professor in Sarojini Naidu Government Girls PG College, Bhopal, Madhya Pradesh. Earlier he has served in various capacities such as Director, Professor and Head in the Department of Management Studies in various Management Institutes in Jabalpur and Bhopal. He has about 30 years of teaching experience, having a deep sense and knowledge of research. Dr. Yadav was awarded Ph.D. in the year 1991 and MBA in the year 2004 in Human Resource Management (H.R.M.), with specialization in Human Resource Information System from the Faculty of Management Studies (FOMS), College of Materials Management, Jabalpur. He has to his credit a good number of research papers and articles published in various journals and magazines of repute. Many research scholars have been awarded Ph.D. under his supervision. His areas of specialization include human resource management, banking and operations, organizational behariour, industrial psychology, and human resource information system.

Writers Choice Publications Pvt. Ltd.

E-71, Street No. 3, Rama Park Road,
Mohan Garden, New Delhi-110059
Website: writerschoice.in
E-mail: info@writerschoice.in

ISBN : 978-93-90965-05-2

9 789390 965052

₹995.00

18

श्रम शक्ति की अनदेखी और अर्थ व्यवस्था की अकल्पनीय दुर्गति

प्रोफेसर डॉ. संतोष कुमार यादव

ा वायरस महामारी ने वैश्विक अर्थ व्यवस्था को प्रभावित किया है, WHO ने वैश्विक
र में गिरावट की आशंका जताते हुए कहा है कि आंकड़े भयावह होगें ।

क अर्थ व्यवस्था और कोविड-19

व्यापार संगठन जिनेवा ने कहा है कि कोरोना महामारी की वजह से वैश्विक व्यापार
0 में एक तिहाई तक की गिरावट आ सकती है। संगठन ने ये भी कहा कि आंकड़े
ी भयावह हो सकते है। विश्व व्यापार संगठन के एक बयान के अनुसार 'विश्व व्यापार
0 में 13 प्रतिशत से 32 प्रतिशत तक की गिरावट आने की संभावना है। इसका
कोरोना वायरस महामारी के कारण सामान्य आर्थिक गतिविधियां और सामान्य जीवन
रह से प्रभावित होना है।' "ये एक अप्रत्याशित स्वास्थ्य संकट है जो प्रत्यक्ष रूप से
विश्व व्यापार को अपनी चपेट में क्रमशः लेता जा रहा है।

विश्व व्यापार संगठन प्रमुख रोबर्टो ऐज़ेवेदो ने एक बयान में कहा सबसे पहला और महत्वपूर्ण संकट स्वास्थ्य का है। इसके कारण सरकारों ने लोगों के जीवन को बचाने के लिए अप्रत्याशित उपाय किये है। व्यापार और उत्पादन में गिरावट से घरों और कम्पनियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यह सब बीमारी के कारण लोगों के प्रभावित होने के अलावा है।

इस महामारी से बचाव का सबसे पहला और आत्मरक्षा पूर्ण कदम था लॉक डाउन जो विश्व के लगभग सभी देशों ने अपनाया और लॉक डाउन की अवधि अप्रत्याशिक रूप से लम्बी और लम्बी ही होती चली गई, जिसका अनुमान न तो सरकारें लगा सकी और न ही विश्व व्यापार – बाजार – उद्योग और सभी किस्म के कारोबार, नतीजा यह निकला कि उद्योग जगत के पहिए पूरी तरह से रूक गये, सम्पूर्ण विश्व की आर्थिक गतिविधियां अनिश्चित काल के लिए थम गई। सम्पूर्ण आबादी में सभी ओर जहां मजदूरों और नौकरी पेशा समुदाय में बेरोजगारी और भुखमरी फैलने लगी वही व्यापार जगत में भारी आर्थिक मंदी का दौर शुरू हो गया नतीजन व्यापार व्यवसाय बंद होने लगे, बैंकिग व्यवस्थाएं चरमराने की कागार पर खड़ी होने लगी। हालांकि सरकारों ने बैंकों को भी जीवित रखने और लगातार संचालित रखने हेतु जल्दी जल्दी बहुत से आर्थिक पैकेजेस् की घोषणाएं की, और इस दिशा में थोड़ा राहत और सहानुभूति पूर्वक रवैया अपनाना प्रारंभ किया, मूलतः इस प्रकार की व्यवस्थाओं हेतु सरकारें भी पूरी तरह से तैयार नहीं थी, परिणाम स्वरूप जो भी निर्णय लिये गये वे सब इतनी जल्दी बाजी में लिए गये कि योजनाओं के क्रियान्वयन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और निरन्तर पड़ता भी जा रहा है।

गौर तलब है कि मौजूदा संकट से पहले व्यापार तनाव और अनिश्चितताओं तथा धीमी पड़ती आर्थिक वृद्धि की वजह से वैश्विक वस्तु व्यापार पर असर पड़ा था। जिसकी वजह से इसमें 2019 में 0.1 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि एक वर्ष पहले इसके 2.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

वाणिज्यिक सेवा व्यापार पिछले साल अपेक्षाकृत बेहतर रहा। यह 2 प्रतिशत तक बढ़ा था लेकिन 2018 के मुकाबले वृद्धि धीमी थी उस वर्ष इसमें लगभग 9 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई थी। लेकिन चीन में पिछले साल के अंत में कोरोना वायरस का पहला मामला आने के बाद से स्थिति नाटकीय रूप से बदलती चली गई। लोगों की आवाजाही पर रोक, सामाजिक दूरी से बीमारी का फैलाव कम होगा लेकिन इसका परिणाम यह निकला कि श्रम की आपूर्ति, परिवहन और यात्रा पर इसका प्रत्यक्ष रूप से बहुत बुरा प्रभाव पडा।

नौकरियों की दुर्दशा

कोरोना वायरस के चलते विश्व में लगभग 25 करोड़ नौकरियों के खत्म होने का आंकड़ा है। यह आकड़ा संगठित क्षेत्रों पर ज्यादातर आधारित है। असंगठित क्षेत्रों की स्थिति इससे भी भयावह हो चुकी है अकेले भारत को ही ले लें तो यहां पर उन मजदूरों और कामगार